ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
वर्ष : 1, अंक : 1, नवम्बर 2014

उत्तर भारतीय संगीत में घराना परम्परा का उद्‌भव

डॉ. मीना मोघे
सहायक प्राध्यापक कण्ठ संगीत,
शासकीय कालिदास कन्या महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

सार-संक्षेप

घराने मुख्यत: 'गुरुकुल' या 'गुरुशिष्य ' परम्परा के प्रतीक कहे जा सकते हैं। प्रत्येक शिष्य को अपने गुरू, आचार्य शिक्षक के प्रति आस्था, प्रेम होता है। इसी श्रद्धा, प्रेम और आस्था का भाव 'घराने' में निहित होता है। इसी कारण वह इतने लंबे समय तक कायम रह सके। प्राचीन समय से ही संगीत कला का शिक्षण गुरू शिष्य परम्परा से दिया जाता रहा है। ख्याल से पूर्व ध्रुपद शैली ही अधिक प्रचार में थी उसके अस्तित्व के खतरे में आने के पश्चात ख्याल शैली का प्रादुर्भाव होने लगा। इसके पश्चात ध्रुपद से भी लोकप्रिय शैली के रूप में पहचानी जाने लगी। तदन्तर ही ख्याल गायकी के सन्दर्भ में घराना संज्ञा भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रचार में आई। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों के प्रादुर्भाव संबंधी जो मत सामने आते है उससे यही स्पष्ट होता है कि इसकी नींव मुग़ल युग की समाप्ति और अंग्रेजों के शासनकाल में इसका प्रादुर्भाव हुआ। प्रस्तुत शोध-पत्र में विभिन्न विद्वानों द्वारा घराना शब्द की व्याख्या की गई है तथा उनके मतों द्वारा यह भी चर्चा की गई है कि घरानों का मूल रूप से अस्तित्व कब आया होगा तथा उनका विकास किस प्रकार हुआ।

शोध-पत्र

भारतीय शास्त्रीय संगीत की उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति में संगीत शिक्षण की गुरू शिष्य परम्परा के सन्दर्भ में घरानों का विशेष महत्त्व रहा है। परम्पराओं का पालन कर नई सौंदर्य दृष्टि अपनाने पर ही किसी कला की नींव सुदृढ़ होती है और विकास क्रम सहज रूप से बना रहता है। परिवर्तन यह प्रकृति का नियम है अत: संगीत जैसे प्रयोगात्मक कला का इससे अछूते रहने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसी क्रम में जहाँ एक ओर संगीत में घरानों के रूप में ही परम्परा को प्रधानता देते हुए संगीत का प्राचीन स्वरूप तथा विभिन्न लक्षण कुछ सीमा तक क्रियात्मक रूप में सुरक्षित रह सके तो दूसरी और कालक्रम में संगीत के प्रयोगात्मक स्वरूप में सहज ही परिवर्तन होते रहे हैं।

प्राचीन समय से ही संगीत कला का शिक्षण गुरू शिष्य परम्परा से दिया जाता रहा है। इस परम्परा के नाम में परिवर्तन हुए जैसे मत, संप्रदाय, बानी घराना आदि। जिस तरह बानी का सम्बन्ध ध्रुपद से रहा ठीक उसी तरह घराने का सम्बन्ध ख्याल गायकी से रहा। ध्रुपद की चार बानियां यथा खंडार, नौहार, डागुर एवम् गोबरहार ये पृथक-पृथक वैशिष्ट्य पर आधारित है। इन चार बानियों के वैशिष्ट्य भेद को निम्नलिखित दोहे में स्पष्ट किया है—

जोर जोर से खंडार गावे, मधुर कौल से नौहार लेवे।
सांस बड़ी गोबरहार की आलापचारी है डागुर की।

अत: इन चार बानियों की पृथक वैशिष्ट्य के परिणामस्वरूप अपनी-अपनी पृथक परम्परा रही और उस परम्परा का अनुकरण करने वाला शिष्य समुदाय भी रहा।

डॉ. आबानमिस्त्री अपनी पुस्तक 'पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराए' में लिखती हैं—''मध्ययुग में भी ध्रुपद की चार वाणियां प्रसिद्ध थी, जिन्हें चार घराने कहा जा सकता है। ध्रुपद गायकी के प्रचार के पूर्व भी भरतमत, शिवमत हनुमत मत और नारद मत जैसे चारमत प्रचलित थे, जो घराने का पर्याय ही माने जा सकते हैं।''[1]

The distinctive traditional styles of dhrupada the forrunner of khayal were known as banis. Bani is the equivalent of the Gharana in the sense of different styles of musical compositions & for instance dagur bani, khandar bani, Nauhar Bani and Gaurhar Bani. This word is still commonly used in south India while referring to an individual musician's style of presentation of his or her music-vocal or instrumental : the listener might say his bani is pleasing etc.[**2**]

पिछले लगभग 250 वर्षो से ख्याल गायन शैली का भारतीय शास्त्रीय उत्तर हिन्दुस्तानी पद्धति में वर्चस्व बना हुआ है। ख्याल वर्तमान में राग संगीत शास्त्रीय संगीत का पर्याय बन चुका है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में ख्याल गीत प्रकार के सन्दर्भ में 'घराना' यह एक विशिष्ट संकल्पना है। सदारंग ने लगभग 250 वर्ष पूर्व दिल्ली सम्राट मोहम्मद शाह रंगीले (1719-1748) के राज्याश्रय में ख्याल गीत प्रकार को प्रचलित किया। धीरे-धीरे इस गीत प्रकार को मान्यता एवम् लोकप्रियता प्राप्त होने लगी। ख्याल को स्वतंत्रत शैली रूप में मान्यता 18वी सदी में प्राप्त हुई तथा ख्याल शैली 1850 ई. के लगभग स्थापित हो गई थी। एवम् ध्रुपद से भी अधिक लोकप्रिय शैली एवम् प्रतिष्ठित शैली के रूप में पहचानी जाने लगी थी। तदनन्तर ही ख्याल गायकी के सन्दर्भ में 'घराना' यह संज्ञा भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रचार में आई।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों के प्रादुर्भाव संबंधी प्रमुख रूप से जो मत सामने आते है—

कुछ विद्वानों का ऐसा मानना है कि घराने की नींव राजपूत काल में पड़ चुकी थी तथा उसका पूर्ण विकास अंग्रेजी शासनकाल में हुआ।

कुछ विद्वानों का ऐसा मत है कि मुगल युग की समाप्ति और अंग्रेजों के शासनकाल में घरानों का प्रादुर्भाव हुआ।

उपरोक्त मतों में से दूसरा मत अधिक प्रामाणिक माना जा सकता है। कारण 18वीं सदी में ख्याल गायकी का प्रारम्भ मुगलकाल में ही हुआ।

अत: घराने का प्रादुर्भाव मुगलकाल की समाप्ति के समय हुआ होगा, ऐसा मानना उचित प्रतीत होता है। प्रसिद्ध तबला वादिका डॉ. आबान मिस्त्री के अनुसार ''संगीत के घराने कब से प्रारम्भ हुए इस प्रश्न का यदि हम उत्तर देना चाहें तो इन पुस्तकों के तथा व्यक्तिगत विश्लेषणात्मक तर्क वितर्कों के आधार पर यह कह सकते हैं कि भारतीय संगीत में घरानों की नींव भले ही यवन संस्कृति के सम्मिश्रण के बाद पड़ चुकी हो, किन्तु गायन, वादन तथा नृत्य में हम जिन्हें घरानों के नाम से आज पहचानते है, उन घरानों का प्रारम्भ मुगल युग के अंतिम समय में ही हुआ। इसका स्पष्ट और मुख्य प्रमाण यह है कि हमें किसी भी प्राचीन या मध्यकालीन ग्रंथ में घराना शब्द का उल्लेख नहीं मिलता।''[3] यह वही समय था जब भारत में अंग्रेजों का आगमन हो गया था। उस समय संगीतकारों को रियासतों एवम् रजवाडों का संरक्षण प्राप्त था। अत: आर्थिक चिंताओं से मुक्त होने के कारण उन्हें ये अवसर मिला था कि वे रियाज कर संगीत को समृद्ध करें। अत: मुस्लिम शासकों के दरबारों में तथा तत्पश्चात् रियासतों में रहकर जिन संगीतज्ञों को साधना करते हुए अपनी विशिष्ट प्रतिभा के परिणामस्वरूप गायन शैली की निर्माण का अवसर प्राप्त हुआ। इस कारण ही भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराने का प्रादुर्भाव हुआ। किसी ने स्वर को महत्त्व दिया किसी ने लय को महत्त्व दिया, किसी ने दोनों का उचित मात्रा में मिलाप किया और उसके परिणामस्वरूप विभिन्न घरानों का निर्माण हुआ।

घराना शब्द का प्रयोग का प्रारम्भ मध्यकाल में मुस्लिम सभ्यता के प्रभाव का परिणाम माना जा सकता है। घराना शब्द उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में प्रयुक्त एक ऐसा शब्द है जो किसी गायन या वादन शैली में निहित किन्हीं विशेषताओं के कारण ऐसे वर्ग विशेष या संप्रदाय विशेष की ओर संकेत करता है। जिससे सम्बन्ध रखनेवाले कलाकार उन शैलीगत विशेषताओं को अपनी संगीत शैली में अनिवार्य रूप से अंगीकार करते हैं। एक प्रकार की विशिष्ट शैली में दक्षता प्राप्त कर उस शैली विशेष से अपनी पहचान स्थापित करने वाला विशिष्ट वर्ग या संप्रदाय घराने के नाम से जाना या पहिचाना जाता रहा है। जिस प्रकार एक घर में परिवार की शताब्दियों से चलती आ रह है, पारिवारिक परिवेश का एक विशिष्ट स्वरूप होता है, उसी प्रकार संगितिक भाषा में घराने का तात्पर्य उस परंपरा से है, जो गुरू शिष्य का हो या पिता पुत्र का संगीत शिक्षण के समय वह शिक्षक व शिक्षार्थी का ही रहता है। शताब्दियों से चलती हुई परंपरा, उच्चकोटि के गुरू व शिष्य, उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध, स्नेह, श्रद्धा, विश्वास तथा अपनत्व की भावना, शैक्षणिक मर्यादाएँ, सीमाएँ आदि सब मिलकर एक घराने को सार्थक करते हैं।

आज मुख्यत: ख्याल शैली द्वारा ही राग अभिव्यक्ति होती है। ख्याल राग से अलग नहीं है। ख्याल एवम् घराने एक दूसरे के पूरक है। अत: ख्याल शैली के स्थापित होने के पश्चात् घरानों का प्रादुर्भाव हुआ, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

घराना शब्द की परिभाषा—

उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में घराना एक महत्त्वपूर्ण तथा विशिष्ट संकल्पना हैं यह विशेष संकल्पना उत्तर हिन्दुस्तानी संगीत ही में पाई जाती है। संगीत में घराने का बड़ा महत्त्व माना गया है। घराने से तात्पर्य किसी विशिष्ट गुरू परम्परा से होता है। घराने का प्रचलन संगीत की सभी विधाओं में होता है। अर्थात जिस प्रकार गायन के घराने होते हैं उसी प्रकार वाद्य एवम् नृत्य के भी घराने होते हैं। कहा गया है कि—

''वंशो द्विविधाजन्मना विद्यायाच''

अर्थात वंश दो प्रकार से चलते है, एक जन्म से दूसरा विद्या से। जैसे एक घर में जन्म लेने वाले सभी व्यक्तियों का एक ही परिवार या घराना होता है, वैसे ही एक गुरू से विद्या या शिक्षा पाने वाले सभी शिष्यों का भी एक परिवार या घराना होता है।

भारतीय शिक्षा पद्धति में गुरू का स्थान सर्वोपरि माना गया है। संगीत शिक्षा में तो गुरू एवम् शिष्य के भावात्मक एवम् क्रियात्मक विलयन को ही परम लक्ष्य निरूपित किया गया है।[4]

भारतीय शिक्षा की पुरातन परंपरा गुरू-शिष्य परम्परा रही है। घराने मुख्यत: 'गुरूकुल' या 'गुरूशिष्य' परम्परा के प्रतीक कहे जा सकते हैं। प्रत्येक शिष्य को अपने गुरू, आचार्य शिक्षक के प्रति आस्था, प्रेम होता है। इसी श्रद्धा, प्रेम और आस्था का भाव 'घराने' में निहित होता है। इसी कारण वह इतने लंबे समय तक कायम रह सके।

सामान्यत: 'घराना' शब्द का अर्थ है 'परम्परा', 'कुटुम्ब', 'वंश परम्परा', 'परिवार', 'वर्ग', 'सम्प्रदाय', 'रीति', 'शैली' अर्थात मानव समाज की एक वर्ग स्वरूप इकाई यही अर्थ संगीतज्ञों के किसी विशिष्ट गायन पद्धति से संबंधित विशिष्ट वर्ग पर प्रस्थापित किया गया है।[5]

घराना शब्द के लिये परम्परा, पंथ तथा पठड़ी जैसे पर्यायवाची शब्दों का भी उपयोग किया जाता है, इस पर आपत्ति होने का कारण नहीं है। हाँ, यह सही है कि घराना शब्द से जो अर्थ ध्वनित होता है वैसा अन्य शब्दों से नहीं हो सकता। घराना शब्द का मान्य अर्थ परम्परा, पंथ, पठड़ी भले ही हो सकता है। फिर भी घराना शब्द के चारों और एक 'मण्डल' एक 'वलय' है वह अन्य शब्दों में प्रतीत नहीं होता। घराना शब्द के द्वारा कर्तव्यपालन की जिम्मेदारी का स्पष्ट बोध व्यक्त होता है, वैसा अन्य समानार्थी शब्दों के द्वारा व्यक्त नहीं हो सकता। 'घराना' इस एक ही शब्द के कारण कार्य की जो प्रचण्ड व्याप्ति बनी हुई है वह अन्य समानार्थी शब्दों से हर्गिज न बनने पाती।[6]

उत्तर हिन्दुस्तानी रागदारी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में घराना

एक महत्त्वपूर्ण तथा विशेषतापूर्ण संकल्पना है। सामान्यत: घराना शब्द का अर्थ व्यवहार में कुल परम्परा अर्थात कुटुम्ब परम्परा के सन्दर्भ में होता है। परन्तु संगीत के सन्दर्भ में केवल कुल परम्परा इतना ही घराने का तात्पर्य समझ लेना पर्याप्त नहीं। केवल विशिष्ट गायकी गाने वाले कलाकारों की परम्परा, शिष्यों की परम्परा, इतना ही नहीं तो गानरीति (गायन शैली) अथवा गायकी इतने व्यापक अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है। किसी भी घराने का उल्लेख होने पर एक विशिष्ट गायकी प्रस्तुत करने वाली कलाकारों की कुल परम्परा, शिष्यों की परम्परा तथा उस घराने के प्रवर्तक अथवा निर्माता की सौंदर्य दृष्टि से आविर्भूत होने वाली विशिष्ट गायकी की परम्परा इतना विशाल अर्थ इस शब्द में समाया हुआ है। विशेष रूप से ख्याल गायकी के संदर्भ में घराना संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। ध्रुपद, करनेवाले कलाकारों के भी घराने होते हैं, जिन्हें 'बानी' की संज्ञा से जाना जाता है। (ठुमरी प्रस्तुत करने वाले घरानों की गायन शैली को संज्ञा से जाना जाता है।) ख्याल गायकी के संदर्भ में घराना और गायकी ये दोनों संज्ञा सम्मिलित रूप में प्रयुक्त होती है।

अर्थात् घराना 'रीति' या 'शैली' का दूसरा नाम है। इस 'रीति' या 'शैली' का निर्माता प्रत्येक घराने का कोई विशिष्ट प्रतिभावान व्यक्ति होता है, जिसे मूल संस्थापक कहा जाता है। मूल संस्थापक द्वारा भी किसी शैली विशेष का निर्माण जानबूझ कर नहीं किया जाता है। उसके गायन शैली में ही ऐसी विशेषताएँ या खूबियाँ समाविष्ट होती है जिसके कारण लोग उसे गायन शैली की ओर आकर्षित होते हैं। ऐसी प्रभावी गायन शैली का सम्मोहन इतना जबरदस्त होता है कि लोग उसका अनुकरण करते हैं, उसका प्रतिरूप बनना चाहते हैं। ऐसी विशिष्ट गायन शैली को गुणीजनों द्वारा मान्यता मिलने पर तथा उसके अनुकरण का सिलसिला बना रहने पर उस पर घराने की मोहर लग जाती है। यह विशिष्ट शैली जिस कलाकार द्वारा प्रवर्तित होती है वे इसके संस्थापक माने जाते हैं तथा उनके नाम से अथवा निवास स्थान से घराने का नामकरण होता है। घराने का सूत्रपात तब होता है जब उस शैली में कोई विलक्षणता या अनोखातत्व हो। घराना स्थिर तब होता है जब उस शैली का अनुसरण करने वाला शिष्य समुदाय हो। जहाँ अनुकरण के स्थान पर स्वतंत्र प्रतिभा या कल्पना हावी हो जाती है। वहीं घराने समाप्त हो जाते हैं। घराना और वैयक्तिकता दो परस्पर विरोधी कल्पनाएँ हैं। घरानों में केवल मूल संस्थापक में ही वैयक्तिकता हो सकती है। शार्गिदों में कदापि नहीं। जैसा कि डॉ. अरुण बांगरे लिखते है—गीत की बंदिश, गाने का ढंग, स्वर लगाने की पद्धति, आलापकारी तथा लयकारी यह सब मिलकर घराने का निर्धारण करते हैं। ये सभी तत्व एक विशिष्ट घराने के गायकों में समानरूप से विद्यमान रहते हैं क्योंकि गुरू के माध्यम से यह शैली आगे शाश्वत रहती है, परन्तु उनका कम अधिक प्रयोग तथा किसी विशेष तत्व को अधिक महत्त्व तथा बल देने में अंतर आता है। अत: एक ही घराने के गायकों में भी थोड़ा अंतर दृष्टिगोचर होता है, परन्तु मूलभूत तत्व तथा पद्धति एक ही रहती है।[7]

घराना शब्द का अर्थ समझने के लिये उदाहरण स्वरूप भौंसले, सिसोदिया, खिलजी आदि ऐतिहासिक घरानों की कल्पना करें तो हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि घराना वास्तव में अपने परिवार के किसी श्रेष्ठ और पराक्रमी पुरुषों की परंपरा से अपने को आबद्ध करने की सहज प्रवृत्ति है। हिन्दु समाज में गोत्र की कल्पना भी इसी प्रवृत्ति का द्योतक रही है।[8]

अर्थात घराने के उस श्रेष्ठ व्यक्ति के श्रेष्ठ गुण एवम् विचार समाज में चिरंतर बनें रहे तथा भविष्य की धरोहर के रूप में अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जा सके। यही विचार घराना पद्धति का रहा।

डॉ. ना.र.मारूलकर ने घराना पद्धति के विषय में सुंदर शब्दों में अपने विचार व्यक्त किये है—नादब्रह्म की उपासना में निमग्न रहकर अपने जीवन को कृतकृत्य बनाना था दूसरे का जीवन भी पावन बना देना। यही मंशा सभी संगीत घरानों के साधकों में मूलत: थी। बुद्धि तथा भावना इन दोनों में जिसका पलड़ा भारी हुआ उसी मार्ग पर ये साधक चलने लगे। कोई स्वर के माध्यम से भावना को ललकारने लगा, कोई ताल और लय के हिसाब से बुद्धि को चुनौती देने लगे। कुछ साधकों ने इन दोनों में कलात्मक समन्वय पैदा किया। इसी वजह से भिन्न-भिन्न पंथों का निर्माण हुआ। भिन्न भिन्न पंथों के कारण मूलत: एक ही प्रकार की रूपरेखा को भिन्न भिन्न अलंकरणों से अलंकृत किया गया। इसके भी कुछ नियम बने, कुछ बंधन भी निश्चित किये गये। किस अलंकरण का प्रयोग कहां करना चाहिये कहां नहीं करना चाहिये अन्य किसी पद्धति के अलंकरण का उपयोग न किया जाए इस प्रकार के कुछ कलात्मक संकेत निश्चित किये गए। ऐसे सुनिश्चित संकेतों को कला के साम्रज्य में मान्यता एवम् गौरव प्राप्त हुआ। अंततोगत्वा यह सब कुछ कला की संपन्नता की दृष्टि से कल्याणकारी सिद्ध हो गया। इसी समूची प्रक्रिया को हम संगीत का घराना कहते हैं।

घरानों के तालीम द्वारा गुरू वर्षों तक अपनी गायकी को शिष्य के गले में उतारता है। प्रत्येक मनुष्य की आवाज भी अलग-अलग होती है। अत: ऐसे में इस आवाज पर किये जाने वाले संस्कारों के बावजूद भी उसका असर अलग दिखाई देता है। बावजूद इसके घराना पद्धति में गुरू अपनी ही शैली के संस्कार अपने शिष्यों को वर्षों तक देता है तब कहीं गुरू की गायकी की विशिष्टताओं का प्रभाव शिष्य पर होता है।

घराना शब्द की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से इस घराना पद्धति को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

'घराना' 'रीति' या 'शैली' का दूसरा नाम है। कला सौन्दर्य का अविष्कार करती है और इसी के किसी विशिष्ट अंग पर अधिकार प्राप्त हो जाने के कारण घराने का जन्म होता है।[9]

''किसी युगपुरुष द्वारा असामान्य कला कौशल से प्रारम्भ की गई उच्चकोटि की आचार विचार परम्परा याने घराना''।[10]

''कोई असाधाराण, प्रतिभाशाली, प्रबल महत्त्वकांक्षी और कुछ विशेष कर दिखाने की क्षमता पात्र व्यक्ति जब अपनी परम्परागत विद्या में एक अभिनव कल्पना का निर्माण करता है, तब उसकी कलानिर्मित में एक

पृथक दृष्टिकोण के पूर्ण वैशिष्ट्य का उदभव होता है। जो बाद में कुछ विशेष नियमों और सिद्धान्तो से अनुबंधित हो जाती है। शनैः शनैः दूसरे लोगों की शैली से उस शैली की बंदिशों में इतना अधिक अंतर स्पष्ट हो जाता है। जिसकी पृथकता तुरन्त पहचानी जा सकती है, तब वह शैली घराना बन जाती है, जो शिष्य परम्परागत साभिमान और कट्‌टरतापूर्वक निर्वाह की जाती है। घराने के आद्यकर्ता के प्रति श्रद्धा प्रेम और शिष्टता की भावना उसके नियमों के अक्षरशः पालन की क्षमता तथा उसके प्रति गौरव अभिमान की वृत्ति, घराने के परम्परागत विकास का मूल स्त्रोत मानी जा सकती है।''[11]

वा.ह. देशपाण्डे के अनुसार ''घराना माने निशानी या पहचान के हिसाब से गायकी की विशिष्ट गति बनाये रखने वाली लेकिन उसमें हर गायक के साथ नई बातें समाहित करनेवाली और इस प्रकार का सिलसिला बनाये रखनेवाली परम्परा है।

अर्थात घराने को हम एक जातीय समूह मान सकते हैं। प्रत्येक घराने की अपनी विशिष्टता होती है और अपनी इस विशिष्ट शैली का ही वह सच्चा अनुयायी होता है। अपनी इस विशिष्ट शैली में कुशलता एवम् प्रवीणता प्राप्त करना ही उसका लक्ष्य होता है। जहाँ तक संगीत के मूल सिद्धान्तों का प्रश्न है सब घराने उनका पालन करते हैं। रागों की व्याख्या में अंतर हो सकता है, परन्तु उनके सैद्धांतिक आधार में कोई अंतर नहीं होता है और उनकी शास्त्रीय प्रमाणिकता एक सी होती है।

घराना पद्धति का प्रारम्भ एक सहज संयोग नहीं था वरन समाज एवम् देश की तत्कालीन परिस्थिति इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई। आज परम्परागत संगीत की जो पूंजी हमारे पास शेष है उसका श्रेय घरानों को जाता है। प्रत्येक कला मनीशी ने उस प्राप्त ज्ञान का शिष्य प्रशिष्यों में हस्तांतरित किया तथा इस परम्परा को कायम रखा। आज भी कलाक्षेत्र में घराने का महत्त्व कम हुआ हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। कलाकार को अपना परिचय देते समय स्वयं के प्रावीण्य के साथ ही घरानों की प्रतिष्ठा भी आवश्यक होती है।

पाद टिप्पणियाँ

1. मिस्त्री डॉ. आबान ए – पखावज और तबला के घराने एवं परम्परा, पृ.15
2. Gautam M.R. – The Musical Heritage of India, P.94
3. मिस्त्री डॉ. आबान ए – पखावज और तबला के घराने एवं परम्परा, पृ.04
4. बांगरे डॉ. अरुण – ग्वालियर की संगीत परम्परा, पृ. 188
5. बांगरे डॉ. अरुण – ग्वालियर की संगीत परम्परा, पृ. 188
6. मरूलकर डॉ. ना.र. – संगीत के घराने, पृ. 42
7. बांगरे डॉ. अरुण – ग्वालियर घराना, पृ. 10–11
8. बांगरे डॉ. अरुण – ग्वालियर घराना, पृ. 12
9. बांगरे डॉ. अरुण – ग्वालियर की संगीत परम्परा, पृ. 188
10. मरूलकर डॉ. नॉरैं – संगीत के घराने, पृ. 42
11. शर्मा डॉ. स्वतंत्र – भारतीय संगीत का ऐतिहासिक विश्लेषण, पृ. 167–168

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

बांगरे अरुण ग्वालियर घराना 1989 म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल

बांगरे अरुण ग्वालियर की संगीत परम्परा 1995 यशोयश प्रकाशन हुबली (कर्नाटक)

चौधरी सुभद्रा संगीत संचयन 1989 कृष्णा ब्रदर्स अजमेर (राजस्थान)

हलदनकर श्रीकृष्ण बबनराव मिलनोत्सुक दो तानपुरे 2001 दिल्ली विधानिकी प्रकाशन

मिस्त्री आबान ए. पखावज एवम् तबला के घराने एवं परम्परा के की एस. जिजीना

परांजपे शरच्चंद्र श्रीधर संगीत बोध 1992 म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल

मिश्रा राका कण्ठ संगीत में घराना व्यवस्था का विवर्तन 1996 पाठक पब्लिकेशन इलाहाबाद

श्रीखण्डे सुरेश गोपाल हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली 1993 चण्डीगढ़ अभिषेक पब्लिकेशन

शर्मा जीतराम आधुनिक व्यवसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन : परम्परा व लक्षण 2004 संजय प्रकाशन दिल्ली

सक्सेना मधुबाला सक्सेना राकेशबाला संगीत मधुबन (निबंध संग्रह) 2001 चण्डीगढ़ अभिषेक पब्लिकेशन

Sengupta Pradeep Kumar Foundations of Indian Musicology 1991 Abhinav Publication New Delhi

संगीत पत्रिकाएं

बेनर्जी जयश्री 'घराना: उद्‌गम, विकास एवं उनकी सीमाएं' नवम्बर 1997, संगीत, संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)

वेदी भीष्मदेव मुम्बई 'आदि भारतीय सिद्धान्त की कसोटी पर भारत संगीत सम्प्रदाय' अम्टूबर 1958, संगीतकला विहार, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय, मण्डल मिरज

शर्मा महारानी 'घरानों में भारतीय अभिजात संगीत का स्वरूप और आज उसकी स्थिति' संगीत, मई 1979, संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)

त्रिपाठी डॉ. अमिता 'भारतीय संगीत में घराना पद्धति' संगीत जून 2000, संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)